: दृवितीय अध्याय :

रांगेय राघव की कहानियों का सामान्य परिचय ।

: द्वितीय अध्याय :

रांगेय राघव की कहानियों का सामान्य परिचय।

डॉ. रांगेय राघव हिन्दी साहित्य संसार के प्रसिद्ध कहानिकार है। डा. रांगेय राघव ने अल्पायु में ही विपुल साहित्य का निर्माण किया है। उनकी रचनाओं में संपूर्ण जीवन को साहित्यगत रूप देकर परिचित कराने का प्रयास किया गया है। डा. रांगेय राघव ने भिन्न-भिन्न प्रकार की लगभग पचासी कहानियाँ लिखी है। उन्होंने स्वय एक जगह लिखा है, ``शायद सन 1936 से 1958 ई. तक यानी 22 साल में लिखी हैं अस्सी या पचासी।``[1]

डा. रांगेय राघव कहानी साहित्य में अपने समकालिन अन्य लेखकों की तुलना में किसी से पिछे नहीं रहे। वे कहानी साहित्य लेखन में समय के प्रति अधिक सावधान रहे। डा. पुरूषोत्तम बाजपेयी कहते है -

``रांगेय राघव साहित्यकार के रूप में समाजवादी यथार्थ के अन्याधिक समीप हैं। उन्होंने वर्गीय दृष्टि से समाज का यथार्थांकन किया है और ऐसा करने में उनका मूल उद्देश्य नए मानव का निर्माण और उसका विकास रहा है।``[2]

प्रगतिवादी क्षेत्र में डा. रांगेय राघव का स्थान बहुत ऊँचा है। डा. रांगेय राघव की कहानियों में व्यक्ति के मानसिक द्वंद्वों के साथ-साथ शोषित, पीडित जनता का उदात्तवाद दिखाई देता है। इनकी कहानियों में निम्न वर्ग का जीवन संघात अत्याधिक मार्मिक बनकर प्रकट हुआ है। प्रागैतिहासिक आधार पर भी डा. रांगेय राघव ने प्रगतिशील दृष्टिकोन से कहानियाँ लिखी है।

डा. रांगेय राघव का सही परिचय उनकी कृतियाँ है। जीवन में शुरू से अंत तक डा. रांगेय राघव साहित्य से जुडे रहे। उनके कहानी संग्रह निम्नलिखित है।

---

1. रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ-भाग 1, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. सम्पादकिय।
2. हिन्दी कथा साहित्य पर सोविएत क्रांति का प्रभाव- डा. पुरुषोत्तम बाजपेयी पृ. 302

1. साम्राज्य का वैभव
2. समुद्र के फेन
3. देवदासी
4. जीवन के दाने
5. अधूरी मूरत
6. अंगारे न बुझे
7. ऐयाश मुर्दे
8. इंसान पैदा हुआ
9. पाँच गधे
10. मेरी प्रिय कहानियाँ
11. एक छोड़ एक

उपर्युक्त कहानी संग्रहों में सम्मिलित सभा कहानियाँ `रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ भाग-1 व 2 ` में संकलित है। इन किताबों का प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध के लिए उपयोग किया है। इसके आधार पर ही रांगेय राघव की प्रतिनिधि कहानियों का सामान्य परिचय प्रस्तुत किया है। पहले `रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ भाग-1` में संकलित प्रतिनिधि कहानियों का सामन्य परिचय :-

अभिमान :-

प्रस्तुत कहानी पेशेवर भिखारियों के जीवन पर आधारित है। बस्ती के सारे लोग परम्परा से भीख माँगते आ रहे है। लेकिन बस्ती के आनन्दी और रग्घू ये दो पति-पत्नी को भीख माँगकर जीना अच्छा नहीं लगता। वे मील में काम करते है। वे बस्ती के दूसरे लोगों को भी यह भिखारी का जीवन त्यागने

के लिये कहते है। आनन्दी अकाल के लोगों को दान देकर भिखारी का कलंक मिटाती है - ``और भीड की आड़ में से ही देख आनन्दी फिर हिचक गई। ठिठक गए पैर ! दुअन्नी !फिर विचार आया, और सौदामिनी ने ही कौन मोती दिए होंगे ! बढ़ ही गई और डाल दी झोली में दुअन्नी ! सामने खड़े लड़के ने पूछा, ``तुम कौन हो माई ? क्या काम है तुम लोगों का ?``

क्या काम है ऐसा जो वह बताए ? संकोच हुआ।सोचा शायद गरीबी का मखौल कर रहा है, किन्तु फिर कहा- मजूर हैं हम। मजदूरी करते हैं।`` और कहते हुए उसका सिर उठ गया जैसे वह बिलकुल शर्मिन्दा न थी।``[1]

लेखक ने यहाँ स्वाभिमानी आनन्दी के द्वारा सूचित किया है कि मनुष्य को लाचारी की जिन्दगी त्यागकर अभिमान से जीना चाहिए।

चकाबू का किला :-

प्रस्तुत कहानी में वासनाग्रस्त बादशाह का चित्रण है। इस बादशाहने हर रात नई औरत को देखा था। उसने एक शहरजादी को कैद कर रखा है। शहरजादी बादशाह को पास नही आने देती। इस कामांध बादशाह को एक तोता-मैना की कहानी सुनाती है। इस कहानी के माध्यम से जीवन की सुंदरता को वह बनाने की कोशिश करती है।

इस कहानी के द्वारा लेखक यह कहना चाहते है कि जो जीवन में केवल वासना में सुंदरता ढूँढते है उनके इर्द- गिर्द जो शाश्वत सुंदरता है उसे वे भूल जाते है।

अवसाद का छल :-

प्रस्तुत कहानी अघटित रूप से खत्म होनेवाली प्रेम कहानी है। पुष्पा और चन्द्रमोहन कालेज के दिनों से एक-दुसरे को चाहते है। कालेज खत्म होने के बाद चन्द्रमोहन सेना में अफसर होता है

1. रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ-भाग 1 सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 15

तो पुष्पा अध्यापिका। कई बरसों बाद वे दोनों मिलते है और दोनों के बीच का प्यार उभरता है -

``चन्द्रमोहन ने उसके बालों की लटों को छुआ। उनमें गंध न थी। फिर भी उसने उसे देखा और निरसंकोच होकर उसके गाल को चूम लिया।``[1]

चन्द्रमोहन पुष्पा से मिलकर चला जाता है और बर्मा की लड़ाई में मारा जाता है।

लेखक ने यहाँ सैनिकों के जीवन के खतरे का वर्णन किया है।

पंच परमेश्वर :-

इस कहानी में रांगेय राघव जी ने पंचो को परमेश्वर मानने की पुरानी कथा, पंचो की भ्रष्ट नीति आदि पर व्यंग्य किया है। इस कहानी में शहर में रहनेवाले कँहारों का जीवन चित्रित है। कन्हाई अपने भाई चन्दा की पत्नी फूलो को पैसे की लालच दिखाकर रख लेता है तो पंचायत सरपंच के कहने से बड़े भाई के पक्ष में फैसला सुनाती है। चन्दा पहले तो बहुत दुखी और अपमानित होता है किन्तु फिर यह सोचकर निश्चित हो जाता है कि अब उसका खर्च कम हो जाएगा और वह आराम से रहेगा। इधर बड़ा भाई कन्हाई शंकित हो उठता है कि वह अपने से कम उम्र इस बहू को कितने दिन रख पाएगा -

``कन्हाई ने सिर झुका दिया। उसने मन ही मन अनुभव किया फूलो बहुत जवान थी और वह भाटे पर था।``[2]

कहाँरों की नैतिकता पर इस कहानी में प्रकाश पड़ता है।

गूंगे :-

प्रस्तुत कहानी में दलितों, शोषितों का जो गूंगापन युग युग से चलता आ रहा है उसके प्रति लेखक ने संवेदना जगाने का प्रयन्त किया है।

---

1. रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ -भाग-2, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 29

2. रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ -भाग-1, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 45

गूंगा जन्म से बहरा और गूंगा है। उसे चमेली के रूप में माँ का ह्रदय मिलता है। वह अकल का तेज है। उसे जगह-जगह नौकरी करके भाग जाने की आदत है। अपने को पीटनेवाले दुष्ट लडकों के प्रति उसका आक्रोश ही उसकी चिल्लाहट बनकर फूट पडती है। उसका दिल अपनी बात कहने के लिए तडप-तडपकर रह जाता है-

``और चमेली सोचती है, आज दिन ऐसा कौन है जो गूंगा नहीं है। किसका ह्रदय समाज, राष्ट्र, धर्म और व्यक्ति के प्रति विद्वेष से, घृणा से नहीं छटपटाता, किन्तु फिर भी कृत्रिम सुख की छलना अपने जालो में उसे नहीं फांस देती- क्योंकि वह स्नेह चाहता है, समानता चाहता है।``[1]

आदमी :-

इस कहानी के माध्यम से लेखक मनुष्य के पेट की व्यथा से होनेवाली दशा का चित्रण करते है।

चमार जाति का पाल्यन कौड़िया परयन की लड़की चिन्नी से शादी करता है। वह गरीब है, उसके घर दो पाली झूठन की भीख माँगने के लिये आते है तब पाल्यन कहता है-

``झूठन बड़े घर के लोग डालते है। हम लोग तो स्वयं मुश्किल से पेट-भर खाना पाते है। उधर ही जाया करो, समझे ?``[2]

पाल्यन शाम को झाड़ियों में पडी पोली की लाश देखता है-वह भूख से मरा है।

लेखक ने निम्न जाति में भूख से मरनेवाले लोग तथा उनके जीवन में खाने की चीजों की कमतरता का चित्रण किया है।

---

1. रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ-भाग-1, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 51

2. वही, पृ. 54

विडंबना :-

प्रस्तुत कहानी हिन्दुस्तान में हुई घुसखोरी का प्रतिनिधित्व करती है। लखनऊ से शाम को चलनेवाली रेल में बहुत भीड़ है। डिब्बे में अंधेरा है। कौन कहाँ बैठा है यह किसी को मालूम नहीं है। सब अंधेरे में ही बात कर रहे है। डिब्बे से किसी की चांदी की मूठ की छड़ी गिरती है तो किसी की गठरी। वे रेल न रोकने के कारण दुखी है। डिब्बे में भीड़ होने के बावजूद भी लोग घुस रहे है-

`डिब्बे में घुसने वालो के लिए भी न जाने कैसे उस भीड़ में अपने आप जगह हो गयी। मनमोहन को विस्मय हुआ। यह हिन्दुस्तान का डिब्बा है। इसमें सदा ही ऐसे लोग जबरदस्ती घुस-घुस आये हैं, और ऐसे ही जगह भी हो गयी है ----।``[1]

इस कहानी के द्वारा लेखक हिन्दुस्तान में हो रही घुसखोरी के साथ-साथ देश की बढ़नेवाली आबादी का चित्रण प्रस्तुत करते है।

गाजी :-

इस कहानी में पनप्नते हिन्दू-मुस्लिम-संघर्ष का चित्रण है। आगरे में इमामपाक एक मस्जिद में बच्चों को पढ़ाते है। मोहसिन और चन्दू इन दो बच्चों के बीच बातों बातों में झगड़ा होता है और वे चाकू से एक दूसरे की उँगली काटते है। मोहल्ले में हिन्दू-मुस्लिम संघर्ष की स्थिति निर्माण हो जाती है लेकिन इमाम लोगों को समझाता है और संघर्ष टल जाता है। अंग्रेज सरकार के खिलाफ रोटी के लिए आगरे के सभी दर्जे के लोग जुलूस निकालते है। इस जुलूस में भी हिन्दू-मुस्लिम संघर्ष की स्थिति निर्माण होती है और उन्हें भी इमाम समझाता हैं।

इस कहानी में लेखक ने यह बताने की कोशिश की है कि हिन्दू-मुस्लिम का संघर्ष ही स्वतंत्रता आन्दोलन को असफल बनाता रहा है।

---

1. रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ- भाग-1, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 58

नारी का विक्षोभ :-

प्रस्तुत कहानी में नारी शोषण का चित्रण किया है। सरजू और सविता में प्यार है। दोनों की शादी हो जाती है लेकिन सरजू अब सरिता से बेहद प्यार नहीं करता। अनजाने में सूरज का दोस्त चंद्रकात सविता का पहले किसी मास्टर से प्रेम था यह बात सूरज को बताता है।सूरज सविता की बिती जिन्दगी के बारे में पूछता है और तबसे दोनों के संबंध बिगडने लगते है। सूरज सविता को अपने गाँव लेकर जाता है। गाँव की स्त्रियाँ पढ़ी-लिखी सविता के खुलेपन पर हाहाकार मचाती है। सविता के आत्म-सम्मान को ठेस पहुँचती है, उसे आजादी चाहिए -

``और मैंने देखा, वह शांत थी। कोई डर नही था उसे। कोई शंका नहीं थी उसके मुख पर। आज मैंने देखा कि स्त्री भी पुरूष की तरह आत्म-सम्मान की आग में तपकर आजादी माँग रही थी, और सारे संसार का अंधकार-भरा पाप उस पर घृणा से लंछन लगा रहा था, उसे बरबाद कर देना चाहता था, पर वह अडिग खडी थी।``[1]

लेखक ने इस कहानी के द्‌वारा सविता और सरजू के माध्यम से बिगडते संबंधो को व्यक्त किया है।

नारी की लाज :-

इस कहानी में वेश्या समस्या का चित्रण किया है। दरियागंज में एक मोहल्ले में एक गर्भवती अपने बहन के साथ आती है। इस गर्भवती को प्रस्तुति के लिए जगह चाहिए। मोहल्ले में रहनेवाला रामसरन उसे अस्पताल लेकर जाना चाहता है मगर वह औरत अस्पताल जाने के लिए तैयार नहीं है। अस्पताल में बच्चे के बाप का नाम पुछने है और यह औरत बना नही सकती कि बच्चे का बाप कौन है ?

इस कहानी में एक वेश्या जो बंगालिन है उसे ऐसी दशा में मदद के लिये कोई तैयार नहीं होता। मनुष्य-मनुष्य के काम नहीं आता इसका एक यह उदाहरण है।

---

1. रांगेय राघव की संपूर्ण कहानियाँ -भाग-1, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 99-100

फूल का जीवन :-

प्रस्तुत कहानी समाज में व्याप्त आर्थिक विषमता पर प्रहार करती है। इंजिनियर साहब एक भिखारी लड़के को देखते है जो फूल का प्रतिक है। मजदूर हड़ताल कर रहे है। इंजिनियर मजदूरों को खरीद लेता है। वह अपनी सुख-सुविधाओं को जुटाने के लिए मजदूरों की ओर से मुँह फेरकर सेठ से सहयोग करता है। अन्त में वह मजदूर का भिखारी लड़का मर जाता है। उसकी मृत्यु नये जीवन को क्रान्ति लाने के लिये चुनौती देती है।

``भौंरे अपनी गूंज से छलकर भौरों का शहद चुराते है और फूल ? ----

मेरे पैरों के पास वह गलीज लाश जो या तो भूख से मरी है, या अत्याचार से ----क्योंकि भयानक लू ने फूल को झुलसा दिया है ---``[1]

इस कहानी में लेखक ने एक बच्चे की मौत दिखाकर समाज में स्थित आर्थिक विषमता पर प्रहार किया है।

घिसटता कम्बल :-

प्रस्तुत कहानी निम्नमध्यवर्ग के जीवन की कहानी है। बिपीन अपने माँ-बाप से झगड़कर अपनी पत्नी रागिनी के साथ शहर में जाकर अलग घर बसाता है। लेकिन वे सुखी नहीं हैं, यंत्रवत जीवन जीते जा रहें है। उनकी आशा है कि जीवन की यह परिस्थिती एक ना एक दिन सुधर जाएगी -

``मन में आया उठाकर फेंक दे, किन्तु साहस नहीं हुआ। जीवन भी तो इस दाल के ही समान है, उसे फेंक दे उठाकर, किन्तु इतना सामर्थ्य है कहाँ। और रात को भी कोयल बोल ही उठती है - कभी-कभी।``[2]

---

1. रांगये राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ-भाग-1, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 114

2. वही, पृ. 119

लेखक ने यहाँ यह बताने की कोशिश की है कि निम्न मध्यवर्ग का जीवन आर्थिक और मानसिक दोनों प्रकार से घूटता है।

पेड :-

प्रस्तुत कहानी अंधविश्वास पर आधारित है। पंडित सालिगराम हवेली के सामने के बरगद के पेड को पुरखों का दैत्य मानता है। बरगद के पेड के नीचे खेलते समय पंडित की बेटी को साप काटता है और वह मर जाती है। पंडित इस पेड को कटवाने के लिए मजदूर लगाता है। एक मजदूर को भी सांप काटता है तो पंडित खुद पेड काटने की कोशिश करता है तो जमींदार के गुर्गो के लट्ठ उस पर पड़ते है।

इस कहानी के द्वारा लेखक ने समाज में रहनेवाले पंडित जैसे अंधविश्वासियों का चित्रण किया है।

गूंज :-

प्रस्तुत कहानी में नायक हरिया आगरा में रहता है। वह धर्म के नामपर चलने वाले कर्मकांड देखता है और हिन्दू-मुस्लिम धर्म की इसी बात की एकता को जान जाता है। एक वेश्या कई अंग्रेज सैनिकों के साथ घूमती रहती है उसका रूपया देखकर हरिया को उससे लगाव हो जाता है। हरिया टीले के पीछे एक अनाथ बच्चे की गूंज सुनता है वह बच्चा किसीका पाप है। कलंक लगाने के भय से किसीने उसे छोडा है।

इस कहानी के द्वारा लेखक वेश्या समस्या को चित्रित करते है और धर्म के गुरू के ढोंग का पर्दाफाश करते है।

दिवालिए :-

यह कहानी पाँच दोस्तों के जीवन पर आधारित है। एम. ए. में पढनेवाला उस्ताद हमेशा अपने दोस्तों को मदद करता रहता है। कौल उस्ताद का दोस्त हैं। वह उस्ताद से अपनी बीमारी का बहाना बनाकर रूपया उधार लेता है। उस्ताद ने परीक्षा फीस के रूपये उसे दे दिये है। परीक्षा फीस भरने की

अवधि समाप्त होनेवाली है। वह अपने दोस्तों के पास रुपया माँगता है- एक-एक करके सारे दोस्त उससे अपना पिछा छुड्डा लेते है।

``उस्ताद की कुछ भी समझ में नहीं आया। वह फिर उठ खड़े हुए। कहाँ है वे दोस्त, जो उन्हें ढाढ़स बँधाते थे ? कहाँ है वे जो उनके बोलने के पहले उनकी तरफ से जवाब देने को तैयार रहते थे ? आज कहीं कोई नहीं है।``[1] उस्ताद फीस नहीं भर पाता।

लेखक ने इस कहानी के द्वारा दोस्त-दोस्त के रिश्तों का खोखलापन दिखाया है।

देवदासी :-

यह एक देवदासी की कहानी है। कवि सिन्धुनाद और राजकुमारी इंदिरा के नाजायाज प्यार की निशानी देवदासी रूक्मिणी है। वह पुजारी रत्नगिरी के साथ मंदिर में रहती है। वह सिंहलद्विप का सौदागर रंगभ्रद से प्यार करती है। देवदासी का अनूठा रूप देखकर सेनापति धनंजय उस पर मरता है। रंगभद्र और रूक्मिणी दोनों सिंहलद्विप जाने का निश्चय करते है। कांची के देव मंदिर में धनंजय रूक्मिणी पर बलात्कार करने लगता है और छीन्-झपट में उसका गला घोटकर मार डालता है। देवदासी के कतल का इल्जाम पुजारी रत्नगिरी अपने पर लेता है और धनंजय को भगाता है।

इस कहानी के द्वारा लेखकने प्राचीन काल में चलनेवाली देवदासी की प्रथा पर प्रकाश डाला है।

काई :-

यह कहानी रूपयों के पिछे लगे एक डाक्टर की है। यह डाक्टर एक मास्टरनी से पाँच सौ रूपये लेकर उसका गर्भ गिराता है। सुधा एक गरीब युवती है वह हमेशा डाक्टर के पास रहती है। डाक्टर को लगता है कि वह उससे प्रेम करती है लेकिन उसका प्रेम हरिश्चंद्र से है। कहानी के सभी पात्र एक दूसरे को सुखी समझते है लेकिन उनका दुख कोई नहीं जानता। सुधा अपना गर्भ गिराने डाक्टर के पास

---

1. रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ-भाग-1, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 176

आती है, उसके पास रूपये नहीं है। डाक्टर रूपये न होने के कारण कोई मदद नहीं करता-

``मुझे तुमसे कोई हमदर्दी नहीं है। यदि तुम पाप करते हुए नहीं हिचक सकती तो समाज को तुम्हें दण्ड देने का पूरा अधिकार है।``[1]

मनुष्य सुख पाने के लिए कौन-सा भी पाप करने के लिए तैयार होता है लेकिन उस पाप से ही वह दुखी हो जाता है यह बात इस कहानी के द्वारा लेखक ने बताई है।

नरक :-

यह कहानी कंजर जाति के लोगों की है। चोरी करना ही इनका व्यवसाय बन गया है। इनमें अनेक बुरी आदतें दिखाई देती है। पन्ना को जुए की लत लगी हुई है। उसकी माँ दुसरों के बर्तन माँजकर घर चलाती है उसका पति मर गया है। पन्ना अपने माँ के साथ अच्छा व्यवहार नही करता। इस जाति के औरतों का कोई चरित्र नहीं है। एक औरत कई लोगों के साथ संबंध रखती है।

इस कहानी में राघव जी ने कंजर जाति के रीति-रिवाजों पर प्रकाश डालते हुए इनकी जिन्दगी नरक जैसी है यह चित्रित किया है।

कुछ नहीं :-

इस कहानी में शोषित स्त्री की व्यथा बताई गई है। एक क्लर्क का अनेक युवतियों से सम्बन्ध होने के कारण अपनी पत्नी में उसे अरूचि पैदा हो गई है। वह गर्भवति है। उसे पागल कहकर घर से निकाल दिया है। अधेड उम्र के अम्रनाथ ने सोलह साल की लड़की से शादी की है। मोहल्ले का दादा गज्जो के साथ पकड़ेजाने पर भी वह उसे घर पर ही रखता है।

लेखक ने यहाँ दो उदाहरणों से स्पष्ट किया है कि स्त्री से पुरूष अपने विचारों से व्यवहार करता है। स्त्री को कुछ भी अधिकार नहीं है।

---

1. रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ -भाग-1, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 232

देवोत्थान :-

इस कहानी में इन्द्रदेव को अन्धविश्वास और साम्राज्यवाद मिलने आए है। वे अपनी रक्षा चाहते है। पृथ्वी पर साम्राज्यवाद का राज है। दूसरा महायुद्ध शुरू है। पूँजीपतियों के खिलाफ मजदूर, किसान हडताल कर रहे है। अन्धविश्वास जापान और जर्मनी का नाश चाहता है। हिन्दुस्तान ने गुलामी की जंजीर तोड दी है।

``हम मजलूमों की मेहनत से

था स्वर्ग बना साम्राज्य बना,

है आज लिया बदला हमने

ऐ झंडे लाल सलाम तुझे।``[1]

यह कहानी मार्क्सवादी विचारधारा की देन है। प्रतिकात्मक रूप से यहाँ पूँजिपतियों का नाश लेखक चाहते है।

मुर्दे :-

इस कहानी में मरघट पर रहनेवाले मनीराम और उसका बेटा बाबू लाश दफन का काम करते है। मरघट पर और भी लोग जिस्में एक बुढी और बाबा रहते है। वे सब चेतनाहीन जीवन जी रहे है। उनके जीवन का कोई अर्थ नहीं है। मनीराम और उसका बेटा बाबू दफने हुए लाश के जेवर कीमती कपड़ा निकालते है। बाबू इस जिंदगी से ऊबकर काम की तलाश में शहर भाग जाता है।

रांगेय राघव जी इस कहानी में जानवर जैसी जिन्दगी जीनेवालों में उनके अन्दर कई-ना-कई मनुष्य जैसा जीने की भावना होती है यह स्पष्ट करते है।

---

1. रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ-भाग-1, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 266

पिसनहारी :-

इस कहानी में जमुना ने अठारह बच्चे को जन्म दिया है। उसका पति मर गया है। घर में बहुत गरीबी है इसीलिए उसके लड़के एक-एक करके उसे छोड़कर शहर जा रहे है। जमुना के पास केवल एक ही बच्चा रहता है। वह भी छोडकर चला जाता है।

``आज वह अकेली थी, किन्तु फिर भी जीने की लालसा से पत्थर पर पत्थर रगड़ कर सबसे भयानक सबसे सशक्त आग निकाल रही थी। जीवन के महाभारत में अठारह अक्षौहिणी की भाँति उसके अठारहों लडके छोड़ चुके थे किन्तु वह नहीं मरी थी - नहीं मरी थी।``[1]

इस कहानी में लेखक ने जमुना की जिजिविषा का चित्रण किया है।

डंगर :-

इस कहानी में बोधासिंह अपनी पत्नी के साथ गाँव में रहता है। उसके दो बेटे है, वे फौजी है। बोधासिंह दो नये बैल खरिदता है। उसके साथ खेती करता है। अचानक एक बैल की मौत हो जाती है। बैल मरने का उन्हें दुख नहीं है उस पर जो रूपया खर्चा हुआ उस रूपयों के लिए दुख करते है। और अचानक ही उनका एक लड़का हरिया युद्ध में मारा जाता है।

इस कहानी के द्वारा लेखक यह स्पष्ट करते है कि मनुष्य को दूसरे प्राणियों से प्यार नहीं करता खुद की औलाद से वह बहुत प्यार करता है।

जीवन की तृष्णा :-

इस कहानी में कहानी की नायिका सौनो तपेदिक से बिमार है। उसका प्रेमी बिहारी उसे बहुत दिनों के बार मिलने आया है। वह सौनो से दूर से बात करता है उसे भय है कि उसे यह बिमारी न लग जाए। सौनो जीना चाहती है लेकिन ऐसे जीवन से उसे घृणा है -

---

1. रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ-भाग-1, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 276

``घृणा ! वही घृणा जो धन में है, संसार में है, जीवन के, मृत्यु के प्रति भी है। और फिर एक और आवाज सुनाई दी - ``तपेदिक है मुझे। कल न मरी आज, दो दिन रह कर भी मैंने सुख नहीं पाया, तो जन्म लेकर ही क्या किया।``[1]

लेकिन सौनो मर जाती है।

यहाँ रांगेय राघव जी ने जीवन के प्रति मनुष्य का अपार प्रेम है वह व्यक्त किया है।

अमरता एक क्षण :-

यह कहानी द्रविड़-आर्य्य युद्ध की और प्रेम की है। द्रविड़-आर्य्य का युद्ध हो रहा है। द्रविड़ोने आर्य्यों पर हमला करके घायल कर दिया है। द्रविड़ों की राजकुमारी आर्य्यों के एक घायल चंद्र से प्यार करती है। उसे बंदी बनाकर अपने महल में रखती है। चंद्र पागल है, वह राजकुमारी का दास समझता है। आर्य्य द्रविडों पर हमला करके राजकुमारी को मार डालते है।

इस कहानी में राघव जी ने मनुष्य के अंदर की प्रेमभावना को स्पष्ट करते हुए यह बताया है कि प्रेम अपने शत्रु से भी हो जाता है।

मरघट के देवता :-

इस कहानी में डाक्टर जोशी बड़े धार्मिक है।वे रूपयों को अधिक महत्व देते है। पड़ोसी बुढिया का बच्चा बीमार है। बुढिया के बार-बार बुलाने से भी डाक्टर बुढिया के घर नहीं जाता। आखिर बुढिया का बच्चा मर जाता है। इधर डाक्टर के बच्चे को ठंड हवा लगने के कारण वह भी मर जाता है। मरघट पर भवानी और मुल्ला मुर्दों को जलाने का काम करते है। बुढिया के बच्चे को जलाने के लिए पैसे नही इसीलिए उसकी लाश नदी में फेंक देते है।

यहाँ रांगेय राघव जी ने बताया है कि मौत ही सच्चाई है।

---

1. रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ-भाग-1, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 284

गुलाम सुल्तान :-

इस कहानी में नायक बुगरा खां सुलतान बल्बन का बेटा है। वह कमला से प्यार करता है जो हिन्दू है। बुगरा और कमला छिपकर मिलते समय सुलतान उन्हें पकडता है। बुगरा खां को सलानत के रीति-रिवाज समझाता है। कमल को समझाकर उसके बाप के पास भेज देता है। मांगधपाल और बिंदुमती को विद्रोह के इल्जाम में बंदी बनाकर लाया जाता है। सुलतान मांगधपाल को सामंत बनाता है और बिंदुमती का तुगरील खां के साथ अनुचित संबंध होने के कारण दोनों को सुलिपर चढ़ाते है।

रांगेय राघव जी ने इस कहानी में राजाओं की राजनीति के साथ एक चतुर सुलतान के व्यवहार पर प्रकाश डाला है।

प्रवासी :-

`प्रवासी` यह एक प्रेम कहानी है। गोपालन एक ब्राह्मण का बेटा है जो मंदिर में अर्चक का काम करता है। वह पोस्टमास्टर की लड़की से प्रेम करता है। वह गरीब है इसीलिए कोमल की शादी वेंकटरामन से हो जाती है। वेंकटरामन कुछ हीदिनों में मर जाता है। गोपालन कोमल की जमींदारी सँभालता है। गाँव के लोग दोनों पर शक करते है इसीलिए गोपालन कोमल को छोड़कर उत्तर भारत आकर रहता है।

प्रस्तुत कहानी में दक्षिण भारत के पात्र परिवेश एवं वातावरण का चित्रण है। इस कहानी में प्रेम का वास्तविक मूल्य त्याग ही है यह बताया है।

अधूरी मूरत :-

इस कहानी में बूढा हरचरण मुर्तियाँ बनाकर दुकान में बेचता है। दुकान में हिन्दुओं के देवताओं की मुर्तियाँ मिलती है। गुलामी है इसीलिए हरचरण कुछ नहीं कर पाता। एक अंग्रेज अमरीका की `आजादी की मूर्ति` बनाने के लिए हरचरण को बताता है। हरचरण ने मूर्ति बनाई है लेकिन उसका चेहरा भारतीय है। हरचरण पैसों के लिए काम करता है। अंग्रेज से पैसे लेकर हरचरण मूर्ति अधूरी नहीं छोड़ता है उसे पूर्ण करता है।

12527
A

इस कहानी के द्वारा लेखक यह सूचित करते है कि मनुष्य को आजादी तब मिल सकती है जब उसमें कुछ त्यागने की प्रवृत्ति हो।

मृगतृष्णा :-

इस कहानी में शमशीर रास्ते पर टूकड़े बेचने का धंदा करता है। ईद के दिन एक चपरासी पुलिस को वह टूकडो के ज्यादा दाम बताता है इसीलिए चपरासी पुलिस उसका माल जब्त करता है और उसे पीटता है। वृद्ध सतार के पास शमशीर को लाया जाता है। यह चपरासी पुलिस रिश्वतखोर है, उसने शहर में रूपये लेकर दंगा करवाया है। शमशीर सतार को बताता है, कि वह गरीब है, उस को इस धंदे से पेट नहीं भरता इसीलिए उसने टूकडों के ज्यादा दाम बनाये थे।

इस कहानी से स्वतंत्रता के पूर्व समाज में जो दारिद्रय और पुलिस का व्यवहार था उसका चित्रण लेखक ने किया है।

इंसान :-

इस कहानी में दिलीप रेल से सफर कर रहा है। दो अंग्रेज सिपाही दिलीप के डिब्बे में बैठे है। दिलीप देखता है कि डिब्बे में बहुत भीड है। सभी हिन्दुस्तानी एक कोने में बैठे है और दो गोरे एक बर्थ पर बैठे है। सभी आपस में धीरे बातचीत कर रहे है। स्टेशन पर दो गरीब लड़के अंग्रेजो के बूट पॉलिश कर रहे है और वेतन की बजाय बख्शीस माँग रहे है। एक अंग्रेज मेम अपनी बच्ची के साथ डिब्बे में आती है। यह बच्ची हिन्दुस्तानी बच्चों के साथ खेलना चाहती है। एक ओर गरीबी तो दूसरी ओर अमीरी है जो अंग्रेजो की है।

इस कहानी में मुट्ठिभर अंग्रेज हमारे हिन्दुस्तान में जुल्म, अत्याचार करते-करते किस तरह अपना जीवन जीते थे इसका चित्रण किया है।

लहू और लोहा :-

इस कहानी में प्रेमलता और मजदूरों का काम करनेवाले बाबू लोग छिपकर मजदूरों को उनके हक्कों के प्रती जगा रहे है। मालिक लोग पुलिस के द्वारा मजदूरों को डरा-धमकाकर चुप कराना चाहते है। तब प्रेमलता कहती है -

``जब तुम्हारा संगठन ये लोग झूठ बोलकर नहीं तोड सकते, तब फौजे भेजकर तुम्हारी हिम्मत तोडते है। वे इस निजाम को तलवार के बल पर कायम रखते है।``[1]

प्रेमलता का पता बताने के लिए पुलिस मजदूरों पर अत्याचार करती है। मालिक के खिलाफ बोलनेवाले लोगों को पुलिस कैद करती है। पुलिस उनकी स्त्रियाओं को भी कुचल देती है। आखिर प्रेमलता को पुलिस पकड़कर ले जाती है।

इस कहानी में मालिक -मजदूर संघर्ष का चित्रण है।

ईमान की फसल :-

इस कहानी में रामनारायण एक क्लर्क है। उसके भाई आजादी के जंग में मारे गए है। अब आजादी मिल गई है और ब्लैक मार्केट वालों के दिन आ गये है। रामनारायण को पुलिस गिरफ्तार करके ले जाती है। घर में अब रामनारायण की बहू ही बच गई है। तीनों भाई देश के लिए कुर्बान हो गए है।

रांगेय राघव जी ने इस कहानी के द्वारा यह बताने की कोशिश की है कि शहिदों के कुटुंबों को आजादी के बाद भी यातनाएँ मिली है।

नया समाज :-

इस कहानी में अंग्रेजों के शासन काल में जो लड़ाई हुई तब महँगाई बढ़ी उसका असर किसानों, मजदूरों और नौकरों पर पड़ा है। स्कूलों के मास्टर इसके खिलाफ हड़ताल करते है। हड़ताल लंबे

---

1. रांगेय राघव की संपूर्ण कहानियाँ -भाग-1, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 454

समय तक चलने से वह टूट जाती है। मास्टर साहब पाठशाला खोलते है। छात्र देखते है कि मास्टरों में परिवर्तन आ गया है। जो कैदी पढ़े- लिखे है उन्हें जेल में दूसरे दर्जे के कमरे में रखते है इसीलिए बच्चे पढ रहे है।

इस कहानी में आजादी के बाद जो बदरशाही थी उसका चित्रण किया है।

इंसान पैदा हुआ :-

इस कहानी में मोहसिन एक आम इन्सान है। भारत-पाकिस्तान विभाजन के बाद भारत में बहुत से गरीब शरणार्थी आए है। शहर में मजदूरों ने हडताल की है। मोहसिन पर पुलिस शक करती है कि वह मजदूरों को भडका रहा है। मजदूरों को जगाने का काम नीलचंद करता है। नीलचंद से मोहसिन की शक्ल मिलती है। इसीलिए पुलिस उसके पीछे पडी है। वर्ग-संघर्ष बढ़ गया है। पुलिस मजदूरों पर जुल्म कर रही है। मोहसिन को लगता है कि वह अधिकारहीन व्यक्ति है उसके पास मेहनत के लिए कुछ नहीं है।

इस कहानी में लेखक ने यह बताया है कि मजदूरों को स्वतंत्रता के बाद भी अपने हक के लिए लड़ना पड़ रहा है।

कठपुतले :-

इस कहानी के चार पात्र जो लेखक है कलक्टर के घर उसे मिलने के लिए जाते है। उनकी शिकायत है कि एक किसान और एक मजदूर को गिरफ्तार किया है। किसान पर बगावत और मजदूर पर लूट का जुर्म लगाया गया है। जेल में उनपर अत्याचार हो रहे है। उनके घर में कमानेवाला कोई नहीं है। ये चार लेखक उन्हें छुडाने की कोशिश कर रहे है -

``इसीको आप आजादी कहते है ? चाहे जिसको जेल में बिना सबूत डाल कर आप जनता के नागरीक अधिकारों पर हाथ डाल रहे है। यह कांग्रेस का राज है।``[1]

जेल में बन्दी न्याय के लिए हड़ताल करते है। लेखक समाचार पत्रों में उनके अत्याचार

1. रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ -भाग-1, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 574

का पर्दाफाश करते है। अंत में एक सम्पादक अपने होशियारी से छूट जाता है।

लेखक ने इस कहानी में आजादी के बाद किसान और मजदूरों पर होनेवाले अत्याचार, रिश्वतखोरी और कठपुतली शासन व्यवस्था पर करारा व्यंग्य कसा है।

आदि कहानियाँ `रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ भाग-एक` में सम्मीलित है। निम्न भाग में `रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ भाग-दो` में सम्मीलित प्रतिनिधि कहानियों का सामान्य परिचय प्रस्तुत है।

लक्ष्मी का वाहन :-

इस कहानी के सेठ फकीरचन्द का कारखाना है। सेठ दो मजदूरों को निकालता है तब मजदूर सेठ के खिलाफ बगावत करते है। मजदूर हडताल करते है। सेठ मजदूरों को धमकाता है और कारखाने को ताला लगाता है। मजदूर जुलूस निकालते है और ताला तोड़कर कारखाने में काम करने लगते है। सेठ फकरीचन्द पुलिस को रिश्वत देकर उनपर हमला करता है। सेठ की विजय होती है।

रांगेय राघव जी ने इस कहानी में मालिक- मजदूर का संघर्ष दिखाया है।

अच्छा और बुरा :-

इस कहानी में वेश्या बस्ती का चित्रण है। वेश्याओं की बस्ती में आनेवाले ग्राहकों का चरित्र नहीं होता है। नूरबख्श पाकिस्तान से भागकर आया है और इस बस्ती में रहता है। बस्ती के पास की सड़क से जूतों के कारखाने के मजदूरों का जुलूस जा रहा है। उनके साथ पुलिस भी है। वेश्या आपस में बातचीत कर रही है कि चोर, डाकूओं के साथ पुलिस रहती है और इन्होंने ऐसा ही काम किया होगा।

रांगेय राघव जी ने इस कहानी में यह बताया है कि वेश्याओं में अच्छा और बुरा यह फर्क नही है।

चिड़ी के गुलाम :-

इस कहानी का नायक प्रताप इमानदार है। मैजिस्ट्रेट के दफ्तर में वह नौकरी करता है। दफ्तर में चलनेवाली रिश्वतखोरी देखकर वह इस्तीफा देने का विचार करता है।

``बात यह है उसने कहा - ``जहाँ मैं काम करता हूँ वहाँ इमानदारी का नाम भी नहीं है। निहायत कमीन किस्म के आदमी है। बात-बात पर रिश्वत।``[1]

प्रताप की इमानदारी के कारण उसके दफ्तर के बाकी लोग उसके दुश्मन हो गये है। इस दुश्मनी को कम करने के लिए वह रिश्वत लेता है और मैजिस्ट्रेट के हाथों रिश्वत लेते हुए पकड़ा जाता है। प्रताप को गिरफ्तार किया जाता है पर वह लक्ष्मी का जादू जानता है वह रूपये देकर छुटता है। रिश्वत का नया तरीका खोजता है और अपने अफसर बनने की बात सोचने लगता है।

तबेले का धुंधलका :-

इस कहानी में शरणार्थी नायक अपनी पत्नी, बच्चा और बहन के साथ भारत आए है। वे रहने के लिए मकान ढूँढ रहे है। लेकिन मकान के लिए पगडी माँगते है। वे गरीब होने के कारण पगडी नहीं दे सकते। एक आदमी रहने के लिए तबेला देने के लिए तैयार होता है लेकिन इसके बदले वह उसकी बहन की इज्जत माँगता है। शरणार्थी मजबूरी के कारण इसके लिए तैयार होता है।

लेखक ने यहाँ मजबूर विवश लोगों की, लैंगिक शोषण की सामाजिक वृत्ती पर क्रोध व्यक्त किया है।

धर्म संकट :-

इस कहानी में पिता-पुत्र दोनों शराबी और भँगेडी है। दोनों हमेशा झगड़ते रहते है। दोनों का झगड़ा मिटाने का काम एक स्त्री करती है जो पत्नी और माँ का धर्म निभाती है। एक बार पिता-पुत्र में

---

1. रांगेय राघव की संपूर्ण कहानियाँ-भाग2, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 17

जोरों का झगड़ा हुआ पिता ने पुत्र को उठाकर दीवार पर फेंक दिया। पुत्र बुरी तरह घायल हुआ। स्त्री अपने पति को कोसती है और बेटे को लेकर घर छोड़कर चली जातीहै।

यहाँ रांगेय राघवजी यथार्थ की धरती से जीवंत चरित्र को उनकी समस्याओं के साथ उठाते है।

तिरिया :-

इस कहानी में अधेड उम्र का पिल्ली एक औरत को लेकर घर आता है। उस औरत में कोई घर-गिरस्ती के लक्षण नहीं है। वह गाँव के चौकीदार को जुता फेंककर मारती है। चौकीदार उसपर मुकदमा दायर करता है। पुलिस पिल्ली को औरत भगाकर लाने के जुर्म में गिरफ्तार किया जाता है। उसे दो महीने की सजा हो जाती है। मन्दो डरोगा सिंह के घर हमेशा के लिए जाकर रहती है।

यहाँ रांगेय राघवजी गाँव में चलने वाले झूठ-पाखण्ड, रिश्वतखोरी तथा बदचलन औरत के रूप को प्रस्तुत करते है।

कमीन :-

इस कहानी में निम्न जाती के मजदूर और चमारों के जीवन पर प्रकाश डाला गया है। सुशिल इनके बस्ती में रहता है। दिनभर काम करना और रात को जुआ खेलना, ताडी शराब पीकर औरतों को पीटना ही इन निम्न लोगों की जिन्दगी बन गई है। सुशील रोज के इन लोगों के झगड़ों से तंग आ गया है। वह शराबियों को सुधारने के लिए उनकी औरतों से कहता है कि जब ये लोग शराब पीकर आए उस दिन इन्हें खाना मत देना, अपने-आप कुछ दिन में सुधर जायेंगे। लेकिन ये औरतें अपने आपको बदलने के लिए तैयार नहीं है।

इस कहानी में अशिक्षा, दरिद्रता और रूढियों में पिसती हुई औरतों का चित्रण है।

सांझ के शिकारी :-

इस कहानी में एक युवक ने एक युवती को भगाकर लाया है। दोनों एक दूसरे से बेहद प्यार करते है। दोनों ने कसम खाई है कि जिन्दगी भर वे एक दूसरे का साथ निभायेंगे। लेकिन युवक को जब जीवन की जिम्मेदारी मालूम होती है तो वह डरकर आत्महत्या करता है। युवक के दोस्त युवती के पास जाते है लेकिन इस बला से वे दूर भाग जाते है। युवती अब अकेली है।

इस कहानी में एक अबला लड़की के जिन्दगी के साथ जो दुरव्यवहार हुआ इसका चित्रण किया है।

ऐयाश मुर्दे :-

इस कहानी का पात्र फकीर एक रफूगर का बेटा है। वह जामा मस्जिद की छाया में रहता है। वहाँ मजार पर हर तरह की औरत मनौती माँगने के लिए आती है। एक औरत हमेशा औलाद की मनौती मनाने के लिए आती रहती है। एक दिन फकीर उसे रात को आने के लिए कहता है और अंधेरे में उसे लेकर जाता है - ``फकीर पागल हो रहा था। उसने उसे अपनी ओर खींच कर उसे अपने शरीर से लगाकर भींच लिया। स्त्री छटपटाने लगी। उसके मुँह से निकला, ``मैं तुम्हारी बेटी हूँ बाबा ! यह क्या कर रहे हो ?``[1]

फकीर उसकी इज्जत लूटते है।

इस तरह लेखक ने धर्म के नामपर चल रही अनैतिकता का पर्दाफाश किया है।

धर्म का दांव :-

इस कहानी का पात्र गोविंद को किसी पंडित ने बताया है कि वह जिसे हाथ लगायेगा वह सोना हो जाएगा। गोविन्द को जुए की लत लगी है। वह अपनी बीवी के जेवर गिरवी रखकर जुआ खेलता है। वह जुए में हार जाता है। मुल्ला ने उसके सभी रूपए जीते है। वह नेक दिल इन्सान है इसीलिए वह

---

1. रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ-भाग-2, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ.70

जीते हुए रूपए वापस करता है। लेकिन गोविन्द बीवी का एक और गहना लेकर जुआ खेलने जाता है।

लेखक ने यहाँ यह बताने की कोशिश की है कि, एक बार अगर बूरी लत लग जाती है तो इन्सान उस चक्रव्युह में फँसता ही चला जाता है और उसकी जिन्दगी तबाह हो जाती है।

जाति और पेशा :-

प्रस्तुत कहानी मेंअब्दुल की जमीन पर जब रामदास खेती करता है तब दोनों के झगड़े हो जाते है। अब्दुल रामदास पर केस दायर करता है। अब्दूल केस नरोत्तम वकील के पास देता है। वकील हिन्दू-मुसलमान के झगड़े में हिन्दूओं की विजय हो इसकी ओर ध्यान देता है। अब्दुल मौलवी साहब से सलाह लेता है और केस तकवी के कोरट में देता है। वकील नरोत्तम अब्दूल से और रूपया वसूल करता है और केस कमजोर बना देता है ताकि फैसला अब्दुल के खिलाफ लगे और सचमूच फैसला अब्दुल के खिलाफ लगता है।

इस प्रकार प्रस्तुत कहानी में रांगेय राघव जी ने अदालत में चलनेवाली धार्मिकता पर करारा व्यंग्य कसा है।

अनामिका :-

इस कहानी का पात्र सुकुमार एक लड़की से प्यार करता है। सुकुमार उसे सुख नहीं दे सकता इसीलिए वह लड़की एक रईस से शादी करती है। सुकुमार चित्र बना रहा है, उसने चित्र में स्त्री की विभिन्न अवस्थाओं की छबी को निकाला है। सभी ओर पूँजीवाद का राज है, मजदूर हडताल कर रहे है। सुकुमार ने अभी तक इस चित्र का नामकरण नहीं किया है। सुकुमार का दोस्त वकील है वह इस चित्र का नामकरण `अनामिका` करता है।

प्रस्तुत कहानी में आजादी के बाद की गरीबी और पूँजीवाद का चित्रण किया है।

बांबी और मंतर :-

इस कहानी में पत्तन और बाबू की बहू एक दूसरे से प्यार करते है। दोनों छिपकर मिलते है। बाबू की बहू शादीशुदा होने के बावजूद भी पत्तन को अपनाने के लिए तैयार होती है। एक दिन पत्तन और बहू को बाबू रंगे हाथ पकड़ता है। पत्तन बाबू की पीटाई करना चाहता है मगर चौधरी पत्तन को चोरी का माल उठवाने का काम बताता है। पत्तन यह काम करते समय पुलिस के हाथों पकड़ा जाता है। पत्तन और बाबू की बहू को चौधरी चालाखी से एक-दूसरे से दूर रखने में सफल होता है।

प्रस्तुत कहानी में नाजायज संबंध रखनेवालों का फल बुरा होता है, समाज उन्हें माफ नहीं करता यह बताया है।

ऊँट की करवट :-

प्रस्तुत कहानी में पंडागिरी करनेवाला गिरिजाकुमार और सरयू पति-पत्नी है। सरयू की सुंदरता देखकर उनके घर मेहमानों का ताता लगा रहता है। उस गाँव का दरोगा की नजर सरयू पर पड़ती है। एक बुढ़िया के जरे उसे दरोगा वश कर लेता है। एक वेश्या का घर जलाने पर दरोगा पर मुकदमा दायर होता है। सरयू भी उसके खिलाफ जाती है। अंत में दरोगा छूट जाता है और सरयू फिर उसके पास जाती है। -``पति ने देखा, वह झूम रही थी। वह नशे में थी। आज उसके मुख से हल्की-हल्की शराब की गंध आ रही थी। ऊँट करवट बदल चुका था-----वह दरोगा के पास से आ रही थी।``[1]

इस कहानी में पुलिस की तानाशाही, वासनाग्रस्तता तथा भ्रष्ट व्यवहार का चित्रण हुआ है।

बच्चा :-

इस कहानी का पात्र गोविन्द सिंह का कोई बच्चा जीवित नहीं रहता है। इसीलिए बच्चा गोद लेने के इरादे से पति-पत्नी दूसरे कस्बो में रहने के लिए जाते है। वहाँ हिन्दू-मुसलमान दंगे की तनतनी

---

1. रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ-भाग-2, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ.106

है। गोविन्द सिंह अनाथालय में बच्चा देखने के लिए जाता है लेकिन वहाँ उसे मनचाहा बच्चा नहीं मिलता। वह वापस आते समय रास्ते में देखता है कि एक मुसलमान दाम्पत्य को कई हिन्दूओं ने घेरा है। उसमें से पति को छूरा भोक दिया है और पत्नी को उठाकर ले गए है। घायल आदमी के पास एक बच्चा रो रहा है। गोविन्द सिंह के हाथ में वह आदमी बच्चे को सौंपता है। गोविन्द सिंह को बच्चा मिल जाता है।

प्रस्तुत कहानी में लेखक ने बच्चे का कोई धर्म नहीं होता इस सच्चाई का प्रतिपादन किया है।

नई जिन्दगी के लिए :-

इस कहानी का प्रमुख पात्र एक निम्न मध्यवर्गीय क्लर्क है। यह क्लर्क घर के दीपक को जन्म देने की ढकोसली बात को लेकर दो बीवियों की मौत के बाद भी तिसरी शादी करता है। उसे कुल नौ लड़कियाँ है। सारी लड़कियाँ घुट-घुटकर अपनी जिन्दगी बिता रही है। यह क्लर्क बाप अपनी कुढ़न छोटी-छोटी बच्चियों को मार मार निकाल करता है। यह देख ठकुराइन कहती है - ``उमर आने पर सब चल दोगी। बेचारे बूढ़े को कंगाल कर जाओगी और उसकी देख-रेख करनेवाला तक कोई न रहेगा। कहीं किसीने उसका मुँह ही काला कर दिया तो बेचारे को डूबने तक की ठौर नहीं मिलेगी। राम-राम! ----पूरी फौज है। बाप रे, कन्यादान करते-करते ही बेचारे के घुटने टूट जाएगें।``[1]

इस प्रकार इस कहानी के द्वारा राघव जी ने रूढ़िवादिता के कारण फैली सामाजिक समस्या को उजागर किया है।

दया के ठिकाने :-

इस कहानी में मजदूर-मालिक का संघर्ष दिखाया है। एक भिखारी लड़की जिसका भाई मजदूर है। मजदूरों का हड़ताल चल रहा है। ऐसे समय यह लड़की मालिक का मुनीम और पंडित को खुश करती रहती है। इसके बदले वे उसे कुछ ना कुछ देते रहते है, उसपर दया करते है।

इस प्रकार लेखक ने गरीबी के कारण स्त्री को अपना शरीर देकर जिन्दगी गुजरनी पड़ती

---

1. रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ-भाग-2, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ.118

है इसका चित्रण किया है।

आकर्षण :-

इस कहानी में सुखदास और लालदास सौतले भाई है। सुखदास एक विधवा से शादी करता है। उसे जब लड़का होता है तब लालदास और उसकी पत्नी सुखदास की पत्नी को भगाने का षड़यंत्र रचते है। सुखदास की पत्नी बच्चे को लेकर भाग जाती है। सुखदास अपनी जायदाद भतीजे के नाम करता है। पंद्रह साल के बाद सुखदास की पत्नी बच्चे को लेकर वापिस आती है तब सुखदास को अपने भाई तथा भाभी के षड़यंत्र का पता चलता है। सुखदास वकील के पास जाकर भतीजे के नाम की हुई अपनी जायदाद अपने बेटे के नाम करने की कोशिश करता है।

इस कहानी में लेखक ने देहात में जायदाद के लिए चलनेवाले षड़यंत्र का पर्दाफाश किया है।

चौथा तरीका :-

इस कहानी में जमींदार और दरोगा दोनों मिलकर गाँव पर अपना राज चलाना चाहते है। मुंशी दिनदयाल जमींदार के आदमी है। उनका पेशा झूठी गवाहियाँ देना है। उसने तीन शादियाँ की है। जमींदार और दरोगा दोनों स्त्री लंपट है। मुंशी दिनदयाल की शादी पर दरोगा और दुधवाला श्यामा में झगड़ा होता है। श्यामा को पंचायत के सामने खड़ा करके उसपर बदजात होने का और लड़कियों को छेडने का जुर्म लगाया जाता है। इसप्रकार दरोगा और जमींदार गाँव पर एक छत्र राज चलाकर बगावत करनेवालो को दबाते है।

इसप्रकार राघव जी ने गाँव में चलनेवाले जमींदार और दरोगा के जुल्म का पर्दाफाश किया है।

मुफ्त इलाज :-

इस कहानी का पात्र नवाब रंगिला आदमी है। वह एक पंजाबिन स्त्री को देखता है जो मजबूरीवश अपने बच्चे को त्याग रही है। उसी बच्चे को नवाब अपनाता है।

``बेवकूफ ! गलती किससे नहीं होती। और भागी हुई तबाह औरत के पास चारा ही क्या था ? अच्छा तो यह नहीं हुआ पर मजबूरी का नाम सब्र है। क्या किया जाये ? जमाना ही ऐसा है समझे ? औरत की कोई जात होती है ? जिसका बाप और खविंद मर गया वह क्या करे ? अबे यह इलाज है, हर्र लगे न फिटकिरी --- मुफ्त-``[1]

इस प्रकार राघवजी ने इस कहानी के द्वारा एक शरणार्थी मजबूरीवश स्त्री का चित्रण किया है।

सतयुग बीत गया :-

इस कहानी में जीवा गाँव में रहता है। गाँव में जो अतित में घटना हुई है वह हमेशा दोहरता है। बाप-बेटे एक ही तवायफ का नाच देखने जाते है। धनी और रईस में क्या फर्क है तथा कश्मीर में रहनेवाली कहारिन की यौवन की बाते चलती रहती है। अतीत की कथाएँ जीवा को याद आती है। अतीत की कथाएँ जीवा को याद आती है और उसे लगता है कि सतयुग बीत गया।

लेखक ने अतीत के साथ चलनेवाले युवक का चित्रण किया है।

नर्स :-

इस कहानी का प्रमुख पात्र नर्स मेरिया युद्ध भूमि पर सैनिकों की मरहम पट्टी करने जाती है। रूस और जर्मन के घायल सैनिक युद्ध भूमि पर पडे है। नर्स एक घायल जर्मन सैनिक के पास जाती है और उसके इरादे सुनती है। वह हिटलर को भगवान मानता है इग्लैंड और रूस को मिटाना चाहते

---

1. रांगेय राघव की संपूर्ण कहानियाँ -भाग 2, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 142

है। नर्स एक घायल रूसी सैनिक के पास जाती है और उसके इरादे सुनती है। वह मजदूरों का राज्य चाहता है, उसे विश्वास है कि रूसी ही जित जाएगें। नर्स जानती है कि प्राचीन काल से धर्म, साम्राज्य और सुंदरियों के लिए लोग लडते आ रहे है।

इस प्रकार राघवजी ने इस कहानी में एक नर्स का अलग रूप प्रस्तुत किया है।

अंगारे न बुझे :-

इस कहानी में लोहपीटा जाति का बूढ़ा जाधव लोहे के औजार बनाने का काम करता है। उसकी बेटी मैंना बहुत सुंदर है। उसी गाँव के चौधरी का बेटा कंचन उससे प्यार करता है। कंचन मैंना को फँसाने के लिए उसके ही बिरादरी की लड़की बिछिया का सहारा लेता है। मैंना की वह इज्जत लूटता है। मैंना का बापू उसके गाल को तपे हुए सलाखों से दाग देकर उसका सौंदर्य नष्ट करता है। फिर भी कंचन मैंना को अपनाने के लिए तैयार होता है लेकिन मैंना अपनी बिरादरी के साथ गाँव छोड़कर चली जाती है।

इस कहानी में राघवजी ने लोहपीटा जैसे उपेक्षित जाति का सुक्ष्मता से चित्रण किया है।

भय :-

इस कहानी में कुंदन तुरसी का साला है। वह तुरसी के बेटे की बहू के साथ बलात्कार करता है और रंगे हाथ पकड़ा जाता है। रंगे हाथ पकड़ा जाने के बाद तुरसी आदि को बुरी तरह घायल करता है और दल-बल समेत भाग जाता है। तुरसी पुलिस थाना जाता है, पंचायत बुलाता है। आखिर में पुलिस, पंच मिलकर तुरसी को ही लूट लेते है।

इस कहानी के द्वारा राघव जी ने ग्रामीण व्यवस्था के प्रति गहरा आक्रोश और जनसाधारण के सामन्ती संस्कारों के प्रति विक्षोभ व्यक्त किया है।

आवाजा घुटने लगी :-

इस कहानी में रामरतन मजूदरों का नेता है। सरकार उसके पीछे लगी है। पुलिस उसे गिरफ्तार करना चाहती है। गुरदियाल की पत्नी बीमार है। उसके घर रामरतन ने एक रात के लिए पनाह ली है। इसी वक्त गुरदियाल के घर पुलिस आती है और उसके घर की तलाशी लेती है। रामरतन भाग जाता है। पुलिस निराश होकर वापस लौटती है। गुरदियाल की पत्नी की बीमारी बढ़ गयी है। और एक रात बीमारी बढ़ जाती है और उसकी आवाज घुटने लगती है।

इस प्रकार इस कहानी में आजादी के बाद एक देशभक्त की चलनेवाली दुर्दशा का चित्रण किया है।

स्वप्न और जीवन :-

इस कहानी का प्रमुख पात्र चन्द्रशेखर एक अध्ययनार्थी है। वह शांतिन्किेतन में अध्ययन करने के लिए आया है। उसे जो खाना आता है उससे जो लगता है वह खाता है और बचा हुआ खाना जो झूठा किया न हो वह दूसरों के लिए छोड़ता है। एक शास्त्री नृत्य सिखने का स्वप्न लेकर आया है लेकिन जीवन में मजबूरी के कारण उसे उसी नृत्यशाला में नौकरी करनी पड़ती है।

चन्द्रशेखर अध्ययन के बाद कुछ-कुछ लिखता भी रहता है। उसे मालूम है कि स्वप्न अलग है, जीवन अलग है।

इस प्रकार राघवजी ने इस कहानी में स्वप्न और वास्तवता का चित्रण किया है।

बाप का दोस्त :-

इस कहानी में शिवनाथ के पिता और कृष्ण सहाय दोनों दोस्त थे। शिवनाथ के पिता वकील थे। कृष्ण सहाय अत्यंत गरीब आदमी था। अत: वकीलसाहब ने खुद अपने पडोस का घर खरीदकर कृष्णसहाय के नाम किया। वकीलसाहब की मौत हुई और यहा तक आते कृष्ण सहाय कांग्रेस के

एक सन्मानित व्यक्ति बन गये। पिता के मौत के बाद शिवनाथ, हरनाथ के घर की हालत बुरी हुई। वे कृष्णसहाय के पास मदद माँगने के लिए जाते है मगर कृष्णसहाय उन्हें कोई इज्जत नहीं देता।

इस तरह रांगेय राघव जी ने समाज में नष्ट होती इन्सानियत और घटती हुई नैतिकता को व्यक्त किया है।

घास -फूंस :-

इस कहानी में सुबोध और सरस्वती पति-पत्नी है। सुबोध एक मामूली नौकरी करता है, आमदनी बहुत कम है इसीलिए घर में गरीबी है। सुबोध एक रंगीन आदमी है। वह अपनी पत्नी से अधिक औरों की स्त्रियों को चाहता है। सरस्वती सुबोध के मित्र विवाह न होने के कारण बताती है तब सुबोध के मन में सरस्वती के प्रति संदेह उत्पन्न हो जाता है। देश में बहुत गरीबी है। अनेक मजदूरों को काम से निकला जा रहा है। अनेक शरणार्थी गरीबी से जी रहे है। सुबोध और सरस्वती की जिन्दगी औरों से बेहत्तर होकर भी दोनों में घास-फूंस चलती है।

इस प्रकार लेखक ने यहाँ निम्नमध्य वर्ग की आर्थिक समस्याँ का चित्रण किया है।

जीवन की घृणा :-

इस कहानी का पात्र एक युवक जो दामाद है वह अपने ससुराल आया है। उसकी पत्नी पहले से वही रहती है। उसकी पत्नी अपनी माँ की लाडली होने के कारण पति के साथ ससुराल नही जाती। पति ही दस-दस दिन के बाद ससुराल आता रहता है और पत्नी से मिलता है। उसकी पत्नी की इच्छा है कि उनके परिवार से अलग अपना घर बनाये। पति को यह बात मंजूर नहीं है। पत्नी ससुराल नही आती और पति पत्नी से मिलने ससुराल जाता है। और दोनों पति-पत्नी ऐसे चल रहे जीवन से घृणा करते है।

इस प्रकार राघवजी ने पति-पत्नी के बिगड़ते संबंधों का चित्रण किया है।

रेडियो की दूकान :-

इस कहानी का पात्र श्यामनाथ दर उसकी रेडियो की दूकान है। उसके दूकान में हर तरह के ग्राहक आते है। देश को आजादी मिली है। रेडिओ पर उससे संबंधित खबरे आती रहती है। दूकान में उसका मित्र शुक्ला आता है और लड़कियों के बात पर बहस करता है। एक विलायती लड़की जो तवायफ बन गई है उसे देखकर श्यामनाथ दर के मन में शादी का विचार आता है। लेकिन उस लड़की के ग्राहक चमकिली मोटर में आये है और `बार` में बैठकर पी रहे है यह देखता है और उस लड़की को समझ जाता है। वह स्वयं रेडियो हो चूका है, जो हर प्रकार की खबरे फैलाता रहता है।

इस प्रकार लेखक ने देश की आजादी के बाद बचे हुए विलायतों पर प्रकाश डाला है।

गदल :-

इस कहानी का प्रमुख पात्र गदल एक अधेड उम्र की औरत है। पति के मरने के बाद वह अपना परिवार छोड़कर मौनी नामक दूसरे गूजर के यहाँ जाकर बैठती है। गदल को शिकायत है कि उसके पति के मरने पर सरकारी आदेश से डरकर केवल पच्चीस लोगों को ही क्यों खिलाया गया ? गदल का देवर डोडी गदल के जाने से ठंड लगने के कारण उसकी मौत होती है। गदल वापस आती है। सरकारी आदेश को ठुकराकर उसका कारज धूमधाम से करती है। पुलिस को इस बात की खबर हो जाती है, पुलिस उन पर गोली चलाती है। गदल भी हाथ में बन्दूक लेकर उसका जवाब देती है और पुलिस के गोली का निशाना बनती है। गदल मुस्कराई और धीरे से कहा- ``कारज हो गया, दरोगाजी । आत्मा को शान्ति मिल गई।``[1]

और वह अपने प्राण त्याग देती है।

इस प्रकार लेखक ने गूजर जाति की साहसी, आत्मसम्मानी, स्नेहल, कर्तव्य परायण तथा दबंग नारी का चित्रण प्रस्तुत किया है।

---

1. रांगेय राघव की संपूर्ण कहानियाँ-भाग-2, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 275

पत्तों की पीड़ा :-

इस कहानी में मोहनजोदड़ो के पहले रहनेवाले नागवंशी लोगों का चित्रण है। ब्लुकंदु और उसका बेटा म्लुंदु अपने लोगों के साथ जंगल में नदी के किनारे रहते है। एक दिन अचानक उन लोगों पर विदेशी बाणों से हमला करते है और भाग जाते है। नागवंशी लोगों ने भी पहले वहाँ रहनेवाले लोगों को भगाया था। अब उनपर हमले हो रहे है। वे लोग वहाँ से भाग जाते है। अब वहाँ मोहनजोदड़ो महानगर बसा है।

इस कहानी में लेखक ने संसार में होनेवाले परिवर्तन का चित्रण किया है।

बिल और दाना :-

इस कहानी में एक सन्त है जो लोगों को उपदेश करता रहता है। दान कर दो, अपने पास कुछ मत रखो, संस्कृति का नया युग प्रारम्भ करो इस प्रकार उपदेश करता है। दो आदमियों ने मक्खियों का छत्ता तोडकर उसमें से शहद निकाला है। मक्खियों की साधना नष्ट हो गई है।यह शहद उस सन्त को भेट में मिलता है। और यही खाकर वह उपदेश करता रहता है।

इस प्रकार लेखक ने यहाँ उपदेश और आचरण का एक श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत किया है।

कुत्ते की दुम और शैतान : नये टेक्नीक्स :-

यह कहानी नये टेक्नीक्स से लिखी गई है। इलाहबाद के एक पत्र में सरदार जसवन्तसिंह की एक कहानी छपती है - नैनीताल में रहनेवाले चंचल और सुष्मा बाहर घुमने के लिए जाते है। चंचल एक लेखक है। सुषमा चंचल के साथ राइडिंग करना चाहती है लेकिन चंचल के दिमाग में कोई प्लॉट आ गया है इसीलिए सुभाष चंचल को ही राइडिंग करने के लिए कहता है। चंचल राइडिंग करते हुए निकल जाती है और सुभाष अकेला रहता है।

इस कहानी की आलोचना विभिन्न शहरों के पत्रिकाओं में छपती है। फरवरी में छपी हुई कहानी की आलोचना लगातार एक महिने के बाद छपकर आती है। कहानी कहानीकार लिखता है लेकिन आलोचक लेखक को डरकर `हाय-हाय` करता है।

इसप्रकार लेखक ने इस कहानी में यथार्थ का सत्य और सत्य का यथार्थ दिखाई देता है।

फीकी चाय :-

इस कहानी में डाक्टर, दरोगा, वकील और ओवरसियर साहब गपशप लगाये हुए बैठे है। हर एक अपने अनुभव बता रहा है। वकील ने तो अपने मुवक्किलों को डाकू समझकर रातभर पेड़ पर बैठे रहे और दरोगा डर के मारे भाग गया। डाक्टर बताता है कि उसका कम्पाऊण्डर चोरी से दवाइयाँ बेचता था। पकड़ा जानेपर उसने डाक्टर की पोल खोल दी। इस अनुभव के प्लॉट पर कोई भी लिख सकता है। लेकिन इसमें से इसके लिए कोई तैयार नहीं है। कारण असलियत बाहर आ जायेगी।

इसप्रकार लेखक ने सरकारी नौकरों की सच्चाई का पर्दाफाश किया है।

दरवाजा :-

इस कहानी के पात्र सुक्खी और लच्छमी पती-पत्नी है। लच्छमी शहर की रहनेवाली और सुक्खी गाँव का। दोनों में छोटी-छोटी बातों पर बहस होती। सुक्खी कौनसा भी काम करे लच्छमी अपने मयके में इससे बेहत्तर काम होता कहती रहती है। सुक्खी इन बातों से उबकर एक दिन घर छोड़कर घर लौटता है। वह लच्छमी को सौ रूपये का नोट गोरधन की परिक्रमा करते वक्त मिला है ऐसा बताता है। लच्छमी सुक्खी को गोरधन की परिक्रमा करने के लिए भेजने को उत्सुक है लेकिन सुक्खी जब असली बात कहता है तो लच्छमी उसे टोकती रहती है।

इस प्रकार लेखक ने पति-पत्नी के अनमेल विवाह का श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत किया है।

मैं ज्ञान के आखर, विज्ञान के बोल :-

इस कहानी में `मैं` को हिरोशिमा की भस्म पार्सल में आयी है। `मैं` बीमार है, उसे क्षय हो गया है और वह अस्पताल में इलाज ले रहा है। दूसरे पार्सल में योगी की धूनी की भस्म है। और ये लोग `मैं` से जवाब माँग रहे है। `मैं` जवाब में हिरोशिमा की भस्म को एक आंसू पार्सल करते है। योगी की भस्म को एक बालक की मुस्कान भेजते है। और वह आशा करता है कि यह बदल जाएगा।

इस प्रकार लेखक ने द्विवितीय महायुद्ध के परिणामों का चित्रण किया है।

जानवर देवता :-

इस कहानी में हुसैन मुहम्मद विलायत से लौटकर आया है और अपने मित्रों को हिन्दू-मुस्लिम धर्म के रिति-रिवाजों पर बात कर रहा है। यहाँ अनेक जातियाँ घुल-मिल गई है। प्राचीन काल में

मनुष्य जानवर देवताओं की पूजा किया करता था। दक्षिण भारत के तोण्डनूर गाँव में हिन्दू-मुसलमान झगड़े में हिन्दू कम थे। हिन्दूओं ने मुसलमानों को भगाने के लिए सूअर का खून भीड पर फेंक दिया, भीड हट गई। पुराने काल के आदमी अपनी जरूरतों को महत्व देते थे। जरूरत पूरी करनेवाली चीज देवता बन जाती - ``राजपूत के लिए तलवार कीमती चीज थी। वह तलवार की पूजा रकता था। ब्राह्मण के लिए विद्या बड़ी थी। वह सरस्वती पूजा में किताबे रखकर पूजा करता था। बनिए के लिए दौलत बड़ी थी। वह दीवाली में रूपए की पूजा करता था। शूद्र के लिए नाज बड़ा था। वह होली में आग जलाकर नया नाज भूनकर रंगरेलियाँ मनाता था। और भी पुराने जमाने में गाय मुफीद थी, क्योंकि बैल देती थी, दूध देती थी। वह भी देवता बन गई।``[1]

इस प्रकार लेखक ने भिन्न- भिन्न धर्मों में जानवरों को देवता का स्थान देनेवाली बात पर अपने विचार व्यक्त किए है।

कोने और गोलाइयाँ :-

इस कहानी का प्रमुख पात्र बल्देव बहुत गरीब है। दरोगा उसे कोई केस न मिलने पर थाने में बंद करके उसकी पीटाई करते है। एक दिन दरोगा उसे डर्बी की लॉटरी के टिकट खरीदकर देते है। और बल्देव की दस लाख की लॉटरी निकल आती है। दरोगा को लगता है कि बल्देव लॉटरी की बात सुनकर पागल हो जाएगा या मर जाएगा। इसीलिए उसे थाने में बंद करके उसकी बहुत पीटाई करते है। पीटाई करते समय ही उसे बता देते है कि उसकी लॉटरी निकल आई है। बल्देव यह सुनकर लॉटरी के रूपयों को ठुकराता है। दरोगा तब बल्देव को असलियत बताकर उसके रूपये उसे लौटा देता है।

इसप्रकार लेखक ने इस कहानी में एक इमानदार दरोगा का चित्रण किया है।

ममता की मजबूरी :-

इस कहानी में विमला शर्मा मास्टर रामकिशन की लड़की है। वह ग्रेजूएट है। अस्पताल में वह एक बच्चे को जन्म देती है और तिसरे ही दिन उस बच्चे का गला घोटकर खून करती है। पुलिस उसे गिरफ्तार करती है। उस पर कोर्ट में मुकदमा चलाते है। विमला शर्मा जज को बताती है कि जब उसके पिता रामकिशन की मृत्यु हुई तब वह अपने गुरू के साथ पिता के मित्र के यहाँ नौकरी माँगने के लिए गई थी।

1. रांगेय राघव की संपूर्ण कहानियाँ -भाग- 2, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 362

वहाँ उस पर दोनों ने बलात्कार किया। उसका नतिजा यह नाजायज बच्चा है। वह आगे कहती है- ``मैंने उस बच्चे को पेट में पाला, क्योंकि मैंने सोचा कि दूसरे की जिन्दगी को मुझे खत्म करने का क्या हक है ? मैंने उसे ढोया। लेकिन जब वह पैदा हुआ और मैंने उसका मासूम चेहरा देखा, मुझे लगा कि इसे मैं जिन्दा छोड दू तो इस हराम की औलाद को कौन इज्जत देगा ? अगर मैं पालती हूँ तो यह मुझसे नफरत करेगा या फिर बदचलन, नाली का कीड़ा बन जायेगा।``[1]

जज साहब विमला शर्मा को उसकी ममता की मजबूरी देखकर बाइज्जत छोड देते है। और उसके पिता के मित्र और गुरू को हिरासत में लिया जाता है।

इस प्रकार लेखक ने यहाँ सफेद पोश चेहरों के पीछे दबी कामांधता, नीचता को व्यक्त किया है।

निष्कर्ष :-

सारांश रूप में डा. रांगेय राघव जी की कहानियों में पारिवारिक जीवन, निम्न वर्गों के रीति रिवाज, अन्धविश्वास, भारत विभाजन, दूसरा महायुद्ध का समाज पर प्रभाव, हिन्दू-मुस्लिम संघर्ष, रिश्वतखोरी, उपेक्षित निम्नवर्ग आदियों का सूक्ष्मता से चित्रण हुआ है। डा. रांगेय राघव की कहानियाँ एक व्यक्ति की न रहकर पूरे समाज की हो गई है। कहानी के अंदर उनके नये विचार, भाषाशैली, शिल्प, संश्लीष्ट विचार एवं संकेत आदि मिलते है।

---

1. रांगेय राघव की संपूर्ण कहानियाँ -भाग-2, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 372